International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कौन तम के पार रे- कह[1] क वता का भाषाशास्त्रीय व श्लेषण

डॉ. वीणा शर्मा, अ सस्टेंट प्रोफेसर,
गार्गी कालेज. दिल्ली व श्व वद्यालय।

सामान्य भाषा और काव्यभाषा के सम्बन्ध सीधे और द्वन्द्वात्मक दोनों प्रकार के होते हैं। एक से दूसरे का वकास ही नहीं होता वरन दोनों के स्वभाव में खास अंतर भी होता है। काव्यभाषा में जितने शब्द होते हैं वे उतना भर ही नहीं कहते बल्कि इससे अ धक कहते हैं। क व अपनी रचना में अनेक बिम्बों और प्रतीकों का प्रयोग करके उसे व शष्ट रूप में ढालता है। बिम्बों में अर्थ संश्लेषण होता है। रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार बिम्ब या भाव चत्र की प्र क्रया अ धक संश्लिष्ट होती है। वह कई तत्त्वों से नि र्मत होने के कारण गतिशील होती है। और प्रतीक की तरह उसका कोई पूर्व अर्थ नहीं होता।[2]काव्यभाषा अपने स्वरूप में व शष्ट होती है। क व उसे अपने शब्द-कौशल से व शष्ट बनाता है। काव्यभाषा संदेश सापेक्ष होती है जिसमें क व अपनी व्यापक बात कह जाता है। यही कारण है क क व की भाषा में अनुभूति की गहनता, प्रबलता और प्रधानता होती है।

चॉम्स्की के अनुसार वाक्य की दो संरचनाएँ होती हैं। गहन संरचना और बाह्य संरचना।[3] क व अपनी अनुभूति में अनेक बिम्बों एवं प्रतीकों की रचना करता है। उसी के अनुसार वह काव्य के लए शब्द चयन करता है। ले कन बाह्य संरचना तक आते-आते वह काव्य की संरचना में अनेक परिवर्तन कर देता है। इन परिवर्तनों को रूपान्तरणों द्वारा उद्घाटित कया जा सकता है।

क व सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य में गीत और संगीत का अद्भुत तालमेल मलता है। निराला ने नए छंद और नए ढंग के गीतों की रचना की है। इनमें नए छन्दों, लय, ताल, शब्द-भंडार का प्रयोग कया है। व श्लेष्य गीत कौन तम के पार रे कह गीतिका में संक लत है। निराला की गीतिका का यह प्र सद्ध गीत राग धम्मार में र चत है। इसकी प्रत्येक पंक्ति में चौदह-चौदह मात्राएँ हैं। प्रस्तुत क वता के व श्लेषण में पहला चरण रुपान्तरण का है।

बाह्य संरचना

1 कौन तम के पार रे कह

गहन संरचना- कौन (है) तम के पार अरे (तू) कह----- अध्याहार रुपान्तरण

2 तम के पार कौन है अरे तू कह ----क्रमभंग रुपान्तरण

2. बाह्य संरचना- अ खल पल के स्रोत जल-जग

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

3 गगन घन-घन धार रे कह

गहन संरचना-अ खल पल के स्रोत जल (और) जग (हैं) (तथा) गगन (ही) सघन (होकर) घन (की) धार बनता है अरे (तू) कह ।

4 बाह्य संरचना - गन्ध व्याकुल कूल उर सर

गहन संरचना- गन्ध (से) व्याकुल (हैं) कूल उर (रूपी) सरोवर (अध्याहृतरुपान्तरण)
उर (रूपी) सरोवर (के) कूल गन्ध (से) व्याकुल (हैं)। क्रमभंग रुपांतरण

5 बाह्य संरचना- लहर कच कर कमल मुख पर

गहन संरचना (सर की) लहर कच (है) कर (हैं) कमल (रूपी मुख पर
(सरोवर की) लहर कच (है) (और) कमल (रूपी) मुख (पर) कर हैं

6 बाह्य संरचना हर्ष अ ल हर स्पर्श शर सर

7 गूँज बारम्बार रे कह।

गहन संरचना हर्ष (रूपी) अ ल हर (रहा है) स्पर्श (का) चुभा हुआ शर औरसरण
(करता है) (जिसकी) गूँज बारम्बार (होती है)

8 बाह्य संरचना उदय में तम भेद सुनयन

गहन संरचना उदय में तम (को) भेद (कर) सुनयन (आते हैं)

9 बाह्य संरचना अस्त दल ढक पलक कल तन

गहन संरचना अस्त (के) दल पलक (से) सुन्दर तन (को) ढक (देते हैं।)

10 बाह्य संरचना निशा प्रय उर शयन सुख-धन

11 सार या क असार रे कह

गहन संरचना निशा (का) प्रय (के) उर (पर) शयन (रूपी) सुख धन
सार है या असार है अरे कह

12 बाह्य संरचना बरसता आतप यथा जल

गहन संरचना बरसता (है) आतप (ही) यथा जल (बन कर) अध्याहार रु.
यथा आतप (ही) जल (बन कर) बरसता (है)

13 बाह्य संरचना कलुष से कृत सुहृत कोमल

गहन संरचना कलुष (में) से (ही) निष्कलुष होता हुआ (मनुष्य) कोमल (होता है।)

14 बाह्य संरचना अ शव उपलाकार मंगल

गहन संरचना (जो) अ शव हैं उपलाकार हैं (पत्थर हैं) (वही) मंगल (हैं) (शव हैं)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

15 बाह्य संरचना द्र वत जल नीहार रे- कह

गहन संरचना द्र वत जल (ही) नीहार (बनता है)

क वता कौन सार्वना मक वशेषण से प्रारंभ होती है। पूरी क वता सल सलेवार उस कौन की ही व्याख्या है क इस तम के परे कौन है। यह संसार रहस्यमय है। इस संसार के परे के सत्य को कोई नहीं जानता ले कन क व ने इस प्रश्न का उत्तर इसी संसार के मध्य से दिया है। दरअसल जो द् वधारूप में भा सत होता है उसी में अभेद होता है। निराला स्पष्ट करते हैं क जो तम के इस पार है वही तम के उस पार भी है। अर्थात् एक ही ब्रह्म की सत्ता सर्वत्र वद्यमान है। यह संसार परिवर्तनशील है जिसके कारण वह अलग-अलग रूपों में दिखाई देता है। मूलत अखंड काल प्रवाह एक ही स्रोत से चला जा रहा है। कहीं भेद नहीं है। क वता के वश्लेषण में भी वरोधात्मक वशेषण, क्रयाएँ भन्न दिखते हुए एक बिन्दु पर एकोन्मुख हैं।[4]

शब्द स्तर पर वश्लेषण- शब्द-चयन में निराला सद्धहस्त हैं। अ धकतर तत्सम शब्दों का प्रयोग है। कुल बारह तद्भव शब्द हैं। पूरी क वता में शब्द-युग्म हैं जहाँ अभेद के आधार पर परम्परित रूपक की स्थिति स्पष्ट हो रही है। इसी से क वता का टेक्शचर स्पष्ट हुआ है। अ खल पल, जल-जग, गगन-घन, घन-धार, गन्ध-व्याकुल, उर-सर, लहर-कच, कमल-मुख, हर्ष-अ ल, स्पर्श-सर, गूँज-बारम्बार, तम-भेद, उदय-अस्त, पलक-कल, निशा- प्रय, उर-शयन, सुख-धन आदि शब्द-युग्मों का प्रयोग करके क व ने रूपक के माध्यम से पूरी क वता में व्याप्त अभेदावस्था की स्थिति को दिखाया है। दूसरी ओर शब्दस्तरीय वरोधी समांतरता क्रयाशील है। जल-जग, कलुष-कोमल, अ शव- शव, द्र वत-जल-नीहार ऊपर से प्रतिभा सत होता यह वरोध क वता में पूरे कथ्य को वश्ले षत करता है।

ध्वनि स्तर पर वश्लेषण- पूरी क वता में ध्वनि स्तर की समतामूलक समानता वद्यमान है। प्रत्येक पंक्ति का अंतिम वर्ण ह्रस्व है। औ से अ तक के प्रसार में क वता का मूल कथ्य भी यही ध्वनि होता है क वृहत्तर प्रश्न जो 'कौन' से (औ) से प्रारंभ होता है। पूरी क वता में इसे बड़े सहज ढंग से व्याख्यायित कया गया है। तीसरी पंक्ति में गगन-घन-घन में जो नाद सौन्दर्य उपस्थित है उसमें ग से घ तक पहुँचना अर्थात् ग अल्पप्राण ही घ महाप्राण में परिवर्तित है जो गहनता का भाव प्रस्तुत कर रहा है। कथ्य के स्तर पर भी जो अर्थ स्पष्ट हो रहा है गगन के स्थान पर नभ या व्योम शब्द इसका पर्याय नहीं हो सकते थे। दूसरे बंध में अंत्यानुप्रास का सुंदर प्रयोग है। सर, पर, सर, बारम्बार में। क व ने क वता के तीनों बंधों का पैटर्न एक जैसा रखा है। पहले बंध में जहाँ र ध्वनि की आवृत्ति है, दूसरे में न और तीसरे में ल की, वहीं दूसरी ओर घनधार ,बारम्बार, असार और नीहार में न केवल ध्वनि स्तरीय समानता के कारण सौन्दर्य उत्पन्न हो रहा है बल्कि कथ्य की दृष्टि से क व अपनी बात को वस्तार दे रहा है। साथ ही एक निरंतरता भाव भी ध्वनित हो रहा है। प्रत्येक पंक्ति में एक समान चौदह-चौदह मात्राएँ हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वाक्य स्तरीय वश्लेषण- पूरी क वता का पैटर्न एक है। पहले, तीसरे, सातवें, ग्यारहवें और पन्द्रहवें वाक्य में एक सी संरचना है। और दूसरे, चौथे, पांचवे, छठे, आठवें, नवें, दसवें, बारहवें, तेरहवें, चौदहवें वाक्य में एक जैसी संरचना है। पूरी क वता में सहायक क्रया का प्रयोग नहीं है। कह, हर, सर, बरसता और कृत मात्र पाँच क्रयाएँ हैं। इन्हीं सभी क्रयाओं में बारम्बारिता का भाव स क्रय है। दरअसल क्रया का होना समय से बँधना भी होता है ले कन इस क वता में क व ने तीनों कालों की साक्षी बातें कही हैं। जो क्रयापद की अपेक्षा नहीं रखती। केवल लय के कारण क्रयाओं का लोप करना क व का उद्देश्य नहीं था। पूरी क वता में दो प्रश्नवाचक वाक्य हैं। अन्य सभी सरल वाक्य हैं।

अर्थस्तर पर वश्लेषण- अर्थस्तर पर जो कथ्य उजागर हो रहा है वह यह है क तम के पार भी वही है जो इस तम में है। यह संसार ही परिवर्तनशील होकर अलग-अलग रूपों में भा सत होता है। वस्तुतः तम के पार कोई नहीं है। सम्पूर्ण काल के प्रवाह के स्रोत जल और जग हैं अर्थात् स्थावर और जंगम हैं। जल और जड़ का एक ही मूल है। गगन ही घना होकर जल की धारा में बदल जाता है। हृदय रूपी सरोवर के कनारे गन्ध से व्याकुल हैं, सरोवर की लहरें बाल हैं और कमल रूपी मुख पर करणें हैं। आनंद का भँवरा स्पर्श का चुभा हुआ तीर हर रहा है और इस चुभन(निकालने, हरने) में भी आनंद है। इसी की गूँज बारम्बार होती है।

निराला यहाँ एक दृश्य बिम्ब खींचते हैं। सृष्टि का चक्र निरंतर चल रहा है। इस बंध में भी क व निराला पाँच तत्त्वों को लेकर बिम्ब रचते हैं। गन्ध अर्थात् धरती, कमल-मुख अर्थात् रूप, अग्नि, लहर अर्थात् जल, स्पर्श अर्थात् वायु और गूँज अर्थात् आकाश। यह चक्र बारम्बार गुँजरित हो रहा है। पाँच तत्त्वों के आकर्षण में बँधी यह सृष्टि बार-बार आवर्तन करती है। इसमें सुख भी है और दुःख भी। सुख-दुखमय यह संसार ही सत्य है और इस सत्य से परे कुछ भी नहीं है।

अगले बन्ध में सुनयन, सूर्य अथवा सुन्दर नयन अंधकार को चीर कर प्रका शत होता है। सूर्य ज्ञान का प्रतीक है और तम अज्ञान का, वभ्रम का। रात के अंधकार रूपी वभ्रम को भेद कर सूर्य उसे दिन में परिवर्तित कर देते हैं। वहीं दूसरी ओर अस्त के दल सुंदर देह को पलकों से ढंक देते हैं। अर्थात् रात्रि का आना मात्र पलकों का ढका जाना है। रात और दिन के चक्र में बँधी यह सृष्टि सार है या क असार है। अगले बंध में यथा आतप ही जल (वाष्पीकरण) की प्र क्रया से होकर बरसता है। कलुष पाप में से ही निष्कलुष होता हुआ मनुष्य कोमल होता है। पाप-पुण्य, सुख-दुःख, रात-दिन का चक्र इन्हीं में चल रहा है। जो प्रकटत अलग-अलग प्रतिभा सत हो रही है वह वस्तुत एक ही है। जो अमंगल है, अ शव है वही मंगल है, शव है । जो गला हुआ जल है वही नीहार है अर्थात् जो भेद दिख रहा है या दिखता है वह अभेद ही है।

प्रस्तुत गीत में वरोधी समान्तरता के कारण द्वैत की स्थिति अद्वैत में बदल जाती है। जँगम और स्थावर सूक्ष्म और स्थूल, उदय और अस्त, आतप और जल, कठोर और कोमल, अ शव और मंगल इनकी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

द् वध्रुवता स्पष्टता परमात्मा तत्व की ही अपनी द् वध्रुवता है। इस प्रकार यह क वता आस्तिकतावादी भी सद्ध होती है। यहाँ दोनों छोरों पर ईश्वर की उपस्थिति मलती है।

अवयवभूतार्थता--- इस क वता के प्रारंभ में जो प्रश्नात्मक अ भव्यक्ति है क तम के पार कौन है इसका उत्तर है कोई नहीं है स्वयं ब्रह्म भी इस तम में ही वद्यमान है। क्रमश इसी का वस्तार पूरी क वता में हुआ है। तम के परे वही ब्रह्म है जो तम में भी है। यहाँ प्रश्नात्मक सर्वनाम 'कौन' की अवयवभूतार्थता है। इसके अन्तर्गत अर्थ का परमाणु वखंडन होता है।

कौन= अ खल पल के स्रोत

वही जल है
वही जग है
वही गगन है वही घन की धार है
वह गन्धमय है
वह कमलमुख है
वह स्पर्शमय है
वह हर्ष रूप है
वही उदय है
वही सुनयन है
वही अस्त है
वही सार है
वही असार है
वही आतप जल बन कर बरसता है
वह कलुष है
वही कोमल है
वही शव है
वही अ शव हैं
वही द्र वत जल हैं
वही नीहार है।

इस अवयवभूतार्थता से स्पष्ट है क वही ब्रह्म पूरी सृष्टि में भी समाया हुआ है और सृष्टि के परे भी वही वद्यमान है। उस अखंड, अ खल कालस्वरूप, अ खल ब्रह्म के स्रोत जल और जग हैं। अर्थात् स्थावर

और जंगम ही उस अ खल प्रवाह के स्रोत हैं। आकाश ही सघन होकर घन की धारा का रूप धारण करता है। इस रूप रस गन्धमय सृष्टि में भी वही एक ब्रह्म समाया हुआ है। वह इस पंचभूत जगत में भी वद्यमान है। और इसके पार भी, वही अगर प्रकाश रूप है तो वही तम रूप भी है।

सार भी वही है असार भी वही है। इसी तरह वही आतप रूप जल बन कर बरसता है। कलुषता भी वही निष्कलुषता भी वही है। पत्थर अ शव भी वही है और शव भी वही है। जो द्र वत जल है वही नीहार भी है। भेद तो कहीं नहीं है। तम और प्रकाश उसके दो रूप हैं। उनमें निहित सत्ता एक ही है। केवल रूप भन्न हैं।

इस क वता की प्रथम वाक्य- रचना में उपस्था पत प्रश्न तम के पार कौन है- के अन्तर्गत पूरी क वता में व्याप्त उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है क स्वरूप भन्न हैं ले कन उनमें एक ही सत्ता का निर्वाह हो रहा है। उसी की र चत पूरी सृष्टि है यह।

डॉ. वीणा शर्मा एसो सएट प्रोफेसर गार्गी कॉलेज, (दिल्ली वश्व वद्यालय) सीरीफोर्ट रोड नई दिल्ली -49

संदर्भ-

1 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला- गीतिका- भारती भंडार।
2 रामस्वरूप चतुर्वेदी- भाषा और संवेदना
3 अंजनी कुमार सन्हा- नोमचॉम्स्की व्यक्तित्व और कृतित्व स. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, भाषाशास्त्र के सूत्रधार, नेशनल पब्लि शंग हाउस।
4 रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव संरचनात्मक शैली वज्ञान
5 डॉ. शीतांशुनिराला का अल क्षत अर्थगौरव।